# अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस

## *3 दिसंबर 2011*

*"बेहतर संसार के लिए विकलांगों सहित सबके साथ मिलकर विकास की ओर प्रयास"*

## संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की-मून का सन्देश

**पूर्ण भागीदारी एवं समानता** थीम के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र ने तीस वर्ष पूर्व पहली बार अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस का आयोजन किया था। उस कालावधि के दौरान विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा उन अधिकारों की प्राप्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय आदर्शमूलक प्रारूप स्थापित करने की दिशा में वर्ल्ड प्रोग्रैम ऑव ऐक्शन (1982) तथा कन्वेंशन ऑन द राइट्स ऑव पर्सन्स विद डिस्बैलटीज़ (2006) के बीच काफी प्रगति हुई है।

अब अधिकाधिक देश विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा करने और उनको आगे बढ़ाने के प्रति कृतसंकल्प हो रहे हैं। फिर भी, अभी भी बहुत सी चुनौतियां है जिनका सामना करना है। विकलांगता से ग्रस्त लोग अधिक गरीबी और सुविधाओं से वंचना को झेलते हैं तथा स्वास्थ्य संबंधी देखभाल से दूर रहते हैं। कुछेक देशों में तो वे रोजगार की स्थिति में भी देश की कुल आबादी से एक-तिहाई से भी दूर रहते हैं। विकासशील देशों में स्कूलों से उनकी उपस्थिति अन्यों के मुकाबले 10 से 60 प्रतिशत तक कम पायी जाती है।

यह बहुआयामी विरक्ति बहुत महंगी बैठती है न केवल विकलांग व्यक्तियों को बल्कि पूरे समाज के लिए यह क्षतिकारक है। इस वर्ष का विकलांग दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास उसी दशा में टिकाऊ रह सकता है जब यह सुनीतिसंगत हो और यह समस्त लोगों की पहुंच के अंदर हो। अतएव विकलांगता से ग्रस्त लोगों को प्रारंभ से लेकर निगरानी और मूल्यनिश्चयन तक विकास के सभी स्तरों तक शामिल किये जाने की जरूरत है।

नेगेटिव, या निषेधात्मक, प्रवृत्ति, सेवाओं की कमी या उन तक समय रहते न पहुंच पाने की स्थिति तथा अन्य हानिकारक सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक बाधाओं को टाल देने से समाज के समस्त वर्गों को लाभ हो सकता है।

आज इस अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस पर मैं सभी सरकारों, सभ्य समाज तथा वैश्विक समुदाय से अनुरोध करता हूं कि वे संसार भर में विकलांगों के हित के लिए उनके साथ मिलकर टिकाऊ और न्यायोचित विकास के लिए काम करें।

***